उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा 'धर्मयुग पुरस्कार' से सम्मानित

कथा प्रधान त्रैमासिकी

निकट-32

मूल्य : ₹ 40/-

मई-सितम्बर 2022

संपादक : कृष्ण बिहारी

गीतकार विनोद श्रीवास्तव विशेषांक

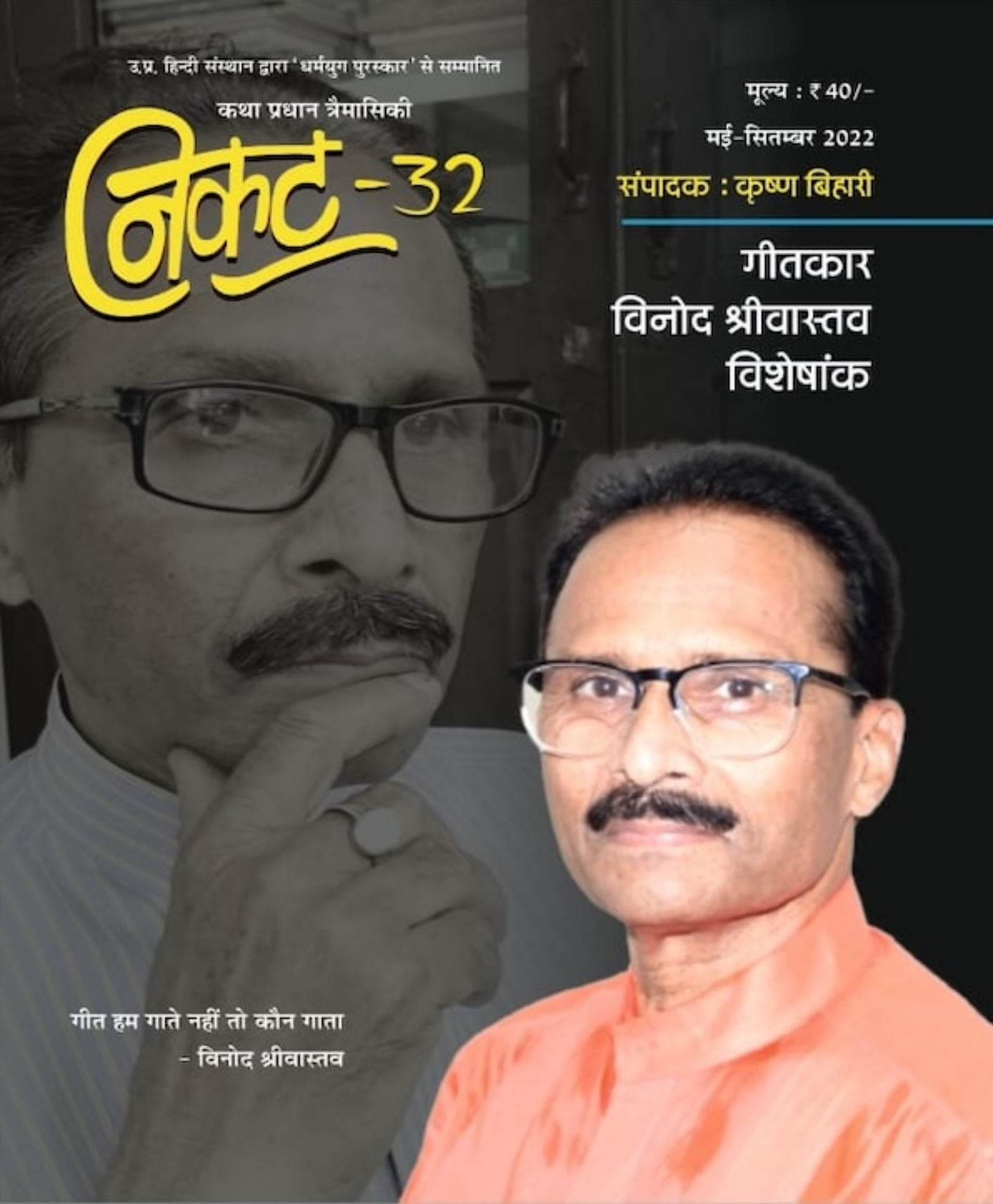

गीत हम गाते नहीं तो कौन गाता

- विनोद श्रीवास्तव

निकट

कथा-प्रधान त्रैमासिकी

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 'धर्मयुग पुरस्कार' से सम्मानित

संयुक्त अरब इमारात से शुरू अब भारत से प्रकाशित

वर्ष-16, अंक - 32, **जुलाई-सितंबर** 2022, मूल्य-₹40

संस्थापक
अशोक कुमार

सलाहकार
राजेन्द्र राव

संपादक
कृष्ण बिहारी

उप-संपादक
रामनारायण त्रिपाठी,
लखनऊ
धनंजय सिंह
राधेश्याम यादव,
अबू धाबी

सहयोगी-राजवंत राज,

रियाज़ अहमद
पारुल तोमर

व्यवस्थापक
अभिनव त्रिपाठी

कानूनी सलाहकार
राजेश तिवारी एडवोकेट
2/241, विजय खण्ड,
गोमती नगर, लखनऊ

आवरण : ऋषभ, अभिनव

रेखांकन : शशि भूषण बडोनी

चित्र : अनिल सिंदूर, गजेंद्र सिंह

मूल्य :
भारत में 40/- रुपये
खाड़ी में 20 दिरहम
यू.के. और अमेरिका में 5 डॉलर

सदस्यता शुल्क
1 वर्ष के लिए = रु 500/-
3 वर्ष के लिए = रु 1500/-
निम्न खाता सं. में
नगर / चेक / डी.डी. जमा करें
बैंक का नाम : बैंक ऑफ बड़ौदा
शाखा : सराय मसवानपुर ब्रांच, कानपुर
खाता सं. Krishna Behari Tripathi
28050100010192
IFSC : BARB0SAPRBS

रचनाएं भेजने का पता
निकट कार्यालय-
HIG-46, B BLOCK, PANKI
KANPUR-208020
Mo. 6307435896
ईमेल:
krishnatbihari@yahoo.com

अगला अंक - सितंबर - दिसंबर 2022

इस अंक में...

संपादकीय - *समय से बात* - **कथा-प्रधान पत्रिका और गीतकार विशेषांक ?** 2
पिछले अंक पर प्रतिक्रिया 4
आत्मकथ्य - **खट्टे-मीठे अनुभवों ने गीतकार बना दिया** 8
आत्मकथा - **माथे की लकीरें मिटाईं-बनाईं** 9
साक्षात्कार-दुनिया से अलग कर देता है कलाकार का आत्म संघर्ष -आरती आस्था 25
विनोद श्रीवास्तव के गीत, आशीर्वचन । 29, 36

किसने क्या कहा , क्या लिखा :

डॉ. ओम निश्चल - **भोर नया गीत रच गई है** 37
डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय - **अर्थ और नाद के कवि** 40
गणेश गंभीर - **कड़ी धूप में ठंडी छांव** 42
वीरेंद्र आस्तिक - **धूप छाँह में तपा अग्निधर्मा व्यक्तित्व** 46
राजेन्द्र राव - **रेत के घर हो गए हैं हम** 50
यश मालवीय - **देह धरा गीत** 52
बृजेश श्रीवास्तव - **लालित्य के कुशल चितेरे** 54
सीमा अग्रवाल - **गीत हम गाते नहीं तो कौन गाता** 56
डॉ. राकेश शुक्ल - **स्मृतियों का कोलाज** 58
राजेन्द्र तिवारी - **सृजनात्मकता नहीं विनोद श्रीवास्तव की आस्था है गीत** 61
प्रताप दीक्षित - **बदल गए शहर में सपनों की तलाश में एक कर्म-योगी** 62
डॉ० शिवकुमार दीक्षित-**विनोद श्रीवास्तव की गीति-सम्पदा : ललित निबंध** 65
प्रियंका गुप्ता - **कुछ खामोशियाँ बोलती हैं** 70
डॉ. सुरेश अवस्थी - **गीत-संसार का कुबेर** 72
मृदुल तिवारी - **अपने गीतों का मधुर गायक** 73
अनूप शुक्ल - **सहज आकांक्षाओं के गीतकार** 74
चंद्रप्रकाश पांडे - **नयी अभिव्यक्तियों का कवि** 77
मनोज जैन - **चोट तो फूल से भी लगती है** 78
डॉ. कमल मुसद्दी - **श्रम और संवेदना की मिट्टी से बना व्यक्तित्व** 80
डॉ. राधेश्याम शुक्ल - **भाई विनोद श्रीवास्तव के गीत** 81
सतीश आर्य - **भीड़ में बाँसुरी लिए एक सुमधुर व्यक्तित्व** 83
देवेश बाजपेई - **प्रेम का कवि,** वी.के. सोनकिया - **खरगोश के...** 84,91
गरिमा सक्सेना - **प्रगतिशील चेतना का वाहक** 86
रवि अग्निहोत्री - **बहुआयामी गीतों के रचनाकार** 88
अवध बिहारी श्रीवास्तव-**भाषा,शिल्प,कवित्त्व और स्वर का अनूठा संगम** 90
संजीव गुप्त - **एक कवि गहरे तक उतरे** 92
विजय किशोर मानव - **पढ़ते हुए सुने जाने वाले गीत** 96
डॉ. शिव ओम अंबर - **नवगीत का मंगल कलश** 99
हरिओम द्विवेदी - **सबका प्यार पाने वाला कवि** 101

परिवार और रिश्तेदारों की नज़र में विनोद श्रीवास्तव : लक्ष्मी देवी अस्थाना, अमिता श्रीवास्तव, पूर्वी श्रीवास्तव, रंजना अस्थाना, सीमा सक्सेना, संस्कृति सक्सेना, मीरा श्रीवास्तव, सुबोध अस्थाना, सिंजा अस्थाना, मंजू सिन्हा, शेफाली श्रीवास्तव, संजय कुमार श्रीवास्तव, प्रदीप श्रीवास्तव, डॉ. शुभांश, अतुल कुमार अस्थाना, मधूलिका, अनूप सिन्हा, मनीष शुक्ल

स्वामी, सम्पादक कृष्ण बिहारी एच.आई.जी. - 46, पनकी, बी ब्लाक, कानपुर - 208020 से प्रकाशित
मुद्रक अमन प्रकाशन कानपुर- 9415475817, 8419891954

संपादकीय

समय से बात

कथा-प्रधान पत्रिका और गीतकार विशेषांक ?

चौंकना स्वाभाविक है । साहित्य जगत में चर्चा है, कानाफूसी है कि 'निकट' का गीतकार पर विशेषांक निकालना किस रहस्य के तहत है। सच कहूँ तो जब मेरे मन में यह बात आई कि विनोद श्रीवास्तव पर पत्रिका का अंक निकालूँ तो चौंकना मुझे भी पड़ा । एक कशमकश से गुजरना पड़ा । लेकिन मेरे फैसले भी तो बड़े अजीब होते हैं । वह फैसला भी क्या जो हैरत में न डाले! आसान फैसले तो सभी करते हैं । कविता को लेकर मेरे मन में कोई भ्रम नहीं है । कविता हृदय की उपज है । वह मुझे अच्छी भी लगती है । हिन्दी के अनगिनत कवि मुझे प्रिय हैं । खड़ी बोली और क्षेत्रीय भाषाओं के रचनाकारों की कृतियाँ अनमोल हैं । कविता ने आदि कवि वाल्मीकि से अब तक निरंतर यात्रा की है । लेकिन यह यात्रा कितनी सार्थक रही है इसे तो आज के नामवर आलोचक ही बता सकेंगे । मैं केवल उन्हीं कविताओं का चाहक हूँ जो हृदय से अप्रयास उपजती हैं । तिकड़मी कवितायें मुझे पसंद नहीं । एजेंडा लेकर आगे बढ़ती पंक्तियाँ मुझमें खीझ भरती हैं । भड़ैती भरी कवितायें अश्लील लगती हैं। शायद यही कारण है कि अपठनीय होती गई कविताओं को पढ़ने और प्रकाशित करने से मैंने खुद को अलग किया। 'निकट' के कथा प्रधान होने का एक कारण यह भी है । जहां कहानी मेरी पसंद है वहीं कविता से मुझे कोई एलर्जी नहीं है । कविता का 'कविता' होना मेरे लिए ज़रूरी है । अगर आप अर्जुन और कर्ण को नहीं समझ पाते, कौशल्या और कैकेयी को नहीं जान पाते, मीरा और राधा को नहीं पहचानते तो फिर कविता आपके लिए नहीं है । आप एजेंडा चलाते रहिए और हर दस साल पर फैशनेबल होते रहिए । जब तक जीएंगे, दो-चार लग्गू-भग्गू आपकी पीठ तब तक सहलाते रहेंगे जब तक आप उनकी पीठ खुजलाते रहेंगे । दैहिक आराम किसे नापसंद है । यह भी हो सकता है कि आप इनाम-एकराम के चक्कर में भी लगे हों और ऐसी कवितायें लिख रहे हों जो केवल इनाम – एकराम देने वालों को ही समझ में आती हों । असल में आपको कवि से ज्यादा आधुनिक बुद्धिजीवी कहलाने की ललक है । इसी ललक के कारण कविताई करना आपकी मजबूरी है ।

पिछले चार-पाँच दशकों से एक और बात बहस में है । मंच की कविता और पत्रिकाओं की कविता । मंच की कविता को प्रिंट में छपने वाले कवि कविता नहीं मानते । अब यह भी क्या कम आश्चर्य की बात है कि जो मंच की कविता को कविता नहीं मानते उन्हें दर्जन भर से अधिक लोग न जानते हैं न पहचानते हैं और न उनकी कविताई किसी को याद रहती है । इस पर तुर्रा यह कि साहिबान और साहिबा बड़े कवि हैं । मंच के कवियों को उनका मोहल्ला ही नहीं बल्कि देश और देश के बाहर भी जाना-सुना जाता है । दूसरी बात, प्रिंट में छपने वाले कवि भी तो चाहते हैं कि उन्हें पढ़ा ही नहीं बल्कि सुना भी जाये । वे गोष्ठियों में, वेबनार जैसे माध्यमों से कवितायें सुना भी रहे हैं । इन दिनों तो ऐसे कवियों की पौ बारह है । मगर उन्हें नहीं लगता कि गोष्ठियाँ और वेबनार भी मंच ही हैं । प्रिंट में रहने वाले मंच के कवियों को गलाबाज़ कहते हैं । अब सवाल है कि अगर किसी का गला अच्छा हो, आवाज़ कर्ण प्रिय हो तो क्या यह उसका दोष है ? इसका उत्तर देना आधुनिक बुद्धिजीवियों के लिए बड़ा कठिन है । अगर मंच की कविता में गिरावट आई है, चुटुकुलेबाजी बढ़ी है, द्विअर्थी शब्दों का अश्लील प्रयोग जमकर हुआ है तो प्रिंट की कविता में ही कौन-सी सजावट जुड़ी है!

हिन्दी में मंचीय कवियों की संख्या भी कम नहीं है । इस भीड़ में कई तो बहुत जाने-माने नाम हैं । सही अर्थों में ये नाम कारपोरेट घराने हो गए हैं । कविता कभी सुख के लिए और यदि कुछ अर्थ लाभ भी हो जाये तो वह इनकी संतुष्टि होती थी लेकिन अब वह सब बिला गया है । अब मंचीय कविता व्यवसाय है । जो जितना बड़ा व्यवसायी वह उतना बड़ा मंचीय कवि।

शहर दर शहर यही हाल है । कानपुर इससे अछूता नहीं है ।

विनोद श्रीवास्तव पर अंक निकालने का मैंने निर्णय इसलिए लिया क्योंकि 45-46 वर्ष पहले जब मैंने इनको सुना और फिर वर्षों के अंतराल के बाद मिलना हुआ तो मुझे ज़िंदगी के साथ जद्दोजहद करते हुए उसी तरह दिखे जैसे तब मिले थे । अपने उन शुरुआती दिनों को याद करता हूँ जब मेरा परिचय नगर के चर्चित कवि श्रीप्रकाश श्रीवास्तव से हुआ था । एक कहानीकार के रूप में तब मैं बिलकुल नया था । एक या दो कहानियाँ प्रकाशित हुई थीं । यह सन 1976-77 की बात है । श्रीप्रकाश के व्यक्तित्व में चुम्बकीय आकर्षण था । पहली मुलाक़ात के बाद ही निकटता बढ़ती गई। प्रकाश उत्तरप्रदेश सरकार के लघु उद्योग विभाग में गोडाउन कीपर के पद पर थे और फजलगंज डिपो में बैठते थे । नगर के प्रायः सभी युवा कवि उनके ऑफिस में जब जी करता , पहुँच जाते । अधिकांश युवा और बेरोजगार थे । बेरोजगारी और मोहब्बत के मारे ये कवि अपने-अपने गीत लेकर छटपटाया करते कि दिल का दर्द निकालने का अवसर तो मिले। मैं गीत – कविताएँ लिखता तो नहीं था किन्तु उन्हें सुनना मुझे अच्छा लगता था । मोहब्बत के बुखार से तप तो मैं भी रहा था ।

ख़ैर ,

इन्हीं कवियों में विनोद श्रीवास्तव को भी देखा । मेरी ही तरह दुबले-पतले, गीत सुनाने के अलावा शेष समय चुप । कई बार की मुलाक़ातों के बाद भी विनोद श्रीवास्तव को तब मैंने मुखर होकर बोलते नहीं सुना था । उनके गीत प्रेम, जिंदगी और एकांत की अभिव्यक्ति करते थे। गीतों में सन्नाटा था जो एक विलग किस्म का सन्नाटा तोड़ता था । मेल मुलाक़ातों का यह सिलसिला दो-ढाई साल ही चला था कि मैं अपनी पहली नौकरी की ज्वायनिंग के लिए सिक्किम चला गया । कानपुर से मेरा निकलना एक तरह से कविता और कवियों के परिचय-क्षेत्र से बहिर्गमन था । कानपुर के कवियों में केवल श्रीप्रकाश श्रीवास्तव ही घनिष्ठ मित्रों की श्रेणी में थे जिनसे उनके असामयिक निधन तक बराबर मिलना होता रहा।

दैनिक जागरण की वार्षिक पत्रिका 'पुनर्नवा' का संपादन जबसे श्री राजेन्द्र राव ने देखना शुरू किया तो अपने वार्षिक अवकाश के दिनों में उनसे मिलने मैं लक्ष्मीदेवी ललित कला एकेडमी में प्रायः हर दूसरे-तीसरे दिन जाया करता । विनोद श्रीवास्तव से मुलाक़ातों का दूसरा सिलसिला